प्रसार शिक्षा निदेशालय
चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
फरवरी 2024 महीने के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले कृषि एवं पशुपालन कार्य

प्रसार शिक्षा निदेशालय, चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर ने फरवरी, 2024 माह के दूसरे पखवाड़े में किये जाने वाले मौसम पूर्वानुमान संबंधित कृषि एवं पशुपालन कार्यों के बारे में निम्नलिखित सलाह दी है, जो किसानों को लाभप्रद साबित होगी।

फसल उत्पादन

- गेहूँ में जहां खरपतवारों में 2-3 पत्तियां आ गई हों, यानि गेहूं की बिजाई के 30 -35 दिन बाद तो उनके नियंत्रण के लिए वेस्टा नामक रसायन की 16 ग्रा. मात्रा 30 लीटर पानी में घोल कर प्रति कनाल की दर से छिड़काव करें। जहां घास कुल के खरपतवारों के साथ चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की समस्या भी हो तो वहां क्लोडिनापफॉप की 24 ग्रा. (10 डब्ल्यू. पी.) या 16 ग्रा. (15 डब्ल्यू. पी.) प्रति कनाल व उसके पश्चात 2,4-डी (80 डब्ल्यू. पी.) की 50 ग्रा. प्रति कनाल का 30 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। 2,4-डी का छिड़काव क्लोडिनापफॉप के छिड़काव के 2-3 दिन के बाद करें। छिड़काव के बाद अगर आवश्यक हो तो हल्की सिंचाई करें अन्यथा खरपतवारनाशी का प्रभाव कम हो जाएगा।
- निचले व मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में सूरजमुखी की ई.सी. - 68415 किस्म की बिजाई करें। कतार से कतार की दूरी 60 सेंटीमीटर व पौधे से पौधे के बीच 25-30 सेंटीमीटर का फासला अवश्य रखें।

सब्ज़ी उत्पादन

- प्रदेश के निचले पर्वतीय क्षेत्रों में भिण्डी पालम कोमल, परभनी क्रांति, पी. 8, अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, यू.एस.- 7109 (संकर), पांचाली (संकर), उमँग (संकर), इन्द्रनील (संकर) तथा फ्रेंच बीन कन्टेडर, प्रीमीयर, पालम मृदुला, फाल्गुनी, सोलन नैना, अर्का कोमल की बिजाई का उचित समय चल रहा है।
- बिजाई के समय भिण्डी में 100 क्विंटल गोबर खाद, 150 कि. ग्रा. इफको मिश्रण (12:32:16), 50 किलोग्राम म्उरेट ऑफ पोटाश तथा 50 किलोग्राम यूरीया तथा फ्रेंच बीन में 200 क्विंटल गोबर खाद, 310 कि. ग्रा. इफको मिश्रण (12:32:16) का प्रयोग अंतिम जुताई के समय करें।
- भिंडी और फ्रांसबीन में प्रभावी खरपतवार नियंत्रण के लिए लासो (एलाक्लोर) @ 3 लीटर या स्टॉम्प (पेंडीमेथालिन) @ 4 लीटर प्रति हेक्टेयर 750 लीटर पानी में मिलाकर बुआई के 2 दिन के भीतर छिड़काव करें।
- प्रदेश के निचले पर्वतीय क्षेत्रों में खीरे की उन्नत किस्मों (लॉन्ग ग्रीन, पॉइन्सेट, यूएस-6125 संकर, नूरी-संकर, मालिनी-संकर, संकर -243) समर स्क्वैश (पूसा अलंकार, ऑस्ट्रेलियन ग्रीन), करेला (सोलन हारा, सोलन सफेद, चमन-संकर, पाली-संकर) और लौकी (पूसा मंजरी, पूसा मेघदूत, पीएसपीएल, वरद-संकर) की सीधी बुआई हो सकती है।
- मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन सब्जियों टमाटर (पालम पिंक, पालम प्राईड, अवतार (संकर-7711), रक्षिता- संकर, पालम टमाटर संकर-1, यश-संकर, हिमसोना-संकर एवं नवीन 2000+ संकर), बैंगन (अर्का निधि, अर्का केशव और हिसार श्यामल), हरी मिर्च (सूरजमुखी) और शिमला मिर्च (कैलिफ़ोर्निया वंडर और योलो वंडर) की पनीरी उगाने के लिए उचित समय चल रहा है।
- पनीरी उगाने के लिए 3 मीटर लंबी, एक मीटर चौड़ी और जमीन की सतह से 10-15 सेमी ऊपर उठी उचित आकार के नर्सरी बेड तैयार करें। 20-25 किलोग्राम अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद, 200 ग्राम एस. एस. पी. या 200 ग्राम इफको, 15-20 ग्राम इंडोफिल-एम 45 और 20-25 ग्राम फोलीडोल धूल प्रति क्यारी में मिट्टी की ऊपरी परत पर मिलाएं और बीज को पंक्तियों में 5 सेमी. की दूरी एव 1-2 सेमी. गहराई में बिजाइ करें।
- इन क्षेत्रों में कद्दुवर्गीय सब्जी की अगेती खेती के लिए खीरा, समर स्क्वैश, करेला, लौकी, तुरई आदि की पॉलीट्यूब नर्सरी भी उगाई जा सकती है। इसके लिए पॉलिथीन बैग (250 किलोग्राम क्षमता) का उपयोग करें और उन्हें FYM, रेत और मिट्टी (1: 1: 1 भाग) के मिश्रण से भरें। प्रति बैग 1-2 बीज बोएं और बेहतर अंकुरण के लिए उन्हें पॉलीहाउस या बरामदे में रखें। पौध के तैयार होने तथा उचित मौसम आने पर इसका पौधा रोपण करें।

फसल संरक्षण

- भूरी सरसों व राया की फसल में इन दिनों तेले का प्रकोप होता है। तेले की रोकथाम के लिए फसल पर साइपरमैथरिन-10 ई.सी. या मिथाईल डेमिटान 25 ई.सी. या 60 मि.ली. डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर का छिड़काव करें। दवाई छिड़कने के बाद सरसों के पत्तों को साग के लिए प्रयोग न करें।
- चने में फली-छेदक सुंडी के आक्रमण के प्रति सावधान रहें तथा इसका अधिक प्रकोप होने की स्थिति में तुरन्त एनपीवी 350-500 लीटर/हेक्टेयर का छिड़काव करें। भारी संक्रमण की स्थिति में, फसल पर कार्बेरिल-10 डब्ल्यूपी @25 किग्रा/हेक्टेयर या साइपरमेथ्रिन (0.01%) या एजाडायरेक्टिन (0.03%) का छिड़काव करें।

- फूलगोभी और पत्तागोभी में एफिड्स और कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी @ 1 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें।
- प्याज के विभिन्न रोगों के नियंत्रण के लिए इंडोफिल या रिडोमिल एम जेड (25 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी में) का छिड़काव करें।
- यदि गेहूं की फसल में पीला रतुआ के लक्षण दिखाई दें, तो कवकनाशी टिल्ट (प्रोपिकोनाज़ोल) 25 ईसी @ 0.1% यानी 30 मिलीलीटर प्रति 30 लीटर पानी प्रति कनाल का छिड़काव करें। 15 दिन के अंतराल पर दोबारा छिड़काव करें।

पशुधन

- पशुओं को कुतरा हुआ हरा चारा सूखे चारे के साथ 10:1 के अनुपात में मिला कर खिलायें। दाना मिश्रण में 2 प्रतिशत खनिज लवण मिश्रण व 1 प्रतिशत नमक मिलाना न भूलें। इस मौसम में पशु ज्यादा मद में देखे जाते हैं अतः पशुओं में गर्माने के लक्षणों की ओर उचित ध्यान दें व ब्यान्त के उपरान्त 2-3 महीने के बीच गर्भाधन करवा लें। यह तभी सम्भव होता है जब पशु का पालन पोषण सन्तोष पूर्ण विधि से हो।
- पशुओं को इस महीने में खुरमूंही बीमारी का टीका अवश्य लगवा लें। नवजात बच्चों को परजीवियों से बचाव का उचित ध्यान रखें, व उनके भार का 1/10 वां भाग खीस प्रतिदिन की दर से अवश्य पिलायें।
- पशुओं को ब्याने से दो महीने पहले सुखा दें, तथा इस अवधि में दाना मिश्रण 2 कि.ग्रा. प्रतिदिन की दर से अवश्य खिलाते रहें।
- बछड़ियों को ब्रूसीलोसिस नामक बीमारी से बचाने के लिए 5-6 महीने की उम्र में टीकाकरण करें।
- गर्भित पशुओं में गर्भाधन सुनिश्चित करने के लिए उनका गर्भ परीक्षण 2-3 महीने के अन्दर-अन्दर अवश्य करवा लें।
- मुर्गीपालन हेतु अच्छे चूजे प्राप्त करने के लिए अच्छी हैचरी में पहले ही अनुबन्ध् कर लें। और उनके पालने की जगह पर उचित तापमान के साथ-साथ अच्छा दाना मिश्रण व स्वच्छ जल की भी व्यवस्था करें। पुरानी मुर्गियों को कृमि-रहित करने की भी उचित व्यवस्था करें। अनुत्पादक व बूढ़ी मुर्गियों की छंटनी भी सुनिश्चित करें।
- मच्छली पालने के तालाबों में देशी खाद डाली जा सकती है। छोटी अंगुलिकाओं मछली के पोषण की भी उचित व्यवस्था सुनिश्चित करें।

किसान भाईयों एवं पशु पालकों से अनुरोध् है कि अपने क्षेत्रा की भौगोलिक तथा पर्यावरण परिस्थितियों के अनुसार अधिक एवं अतिविशिष्ठ जानकारी हेतु नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि अधिकारी से सम्पर्क बनाए रखें। अधिक जानकारी के लिए कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र एटिक 01894-230395/1800-180-1551 से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

निदेशक
प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशलय
चौधरी सरवण कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
द्वारा किसानों के हित में जारी।

प्रतिलिपि
1. सयुंक्त निदेशक; सूचना व जनसम्पर्क, चै.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर।
2. मुख्य सम्पादक, गिरीराज प्रैस परिसर, घोड़ा चौकी, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
3. प्रभारी, यू.एन.एस., चै.स.कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय को बेवसाइट में अपलोड हेतू प्रेषित।
4. केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, धर्मशाला तथा शिमला, हिमाचल प्रदेश।
5. केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, शिमला, हिमाचल प्रदेश।
6. प्रधान ग्राम पंचायत, धरेड (बैजनाथ) को उचित कार्यवाही हेतू प्रेषित

Endst No. QSD 3-57/DEE/Tech/CSKHPKV/- 8756-61 Dated : 15/02/2024